Programme Organized by Dept. of AIHC & Arch. 2021-22

1. सोलह दिवसीय राष्ट्रीय ई-कार्यशाला (12-27 November 2021)

"प्राचीन भारतीय संस्कृति के विविध आयाम"

Sixteen Days National E-Workshop on "Multiple Dimensions of Ancient Indian Culture"

डी०ए०वी० पी०जी० कॉलेज के प्राचीन भारतीय इतिहास,संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग के तत्वावधान में आयोजित "प्राचीन भारतीय संस्कृति के विविध आयाम " विषयक सोलह दिवसीय ई-कार्यशाला का दिनांक 12 नवम्बर 2021 से आरंभ होकर दिनांक 27 नवम्बर 2021 तक चली , जिसमे देश के जाने -माने 16 इतिहासविदों ने लिपि , अभिलेख , मुद्रा , इतिहासलेखन, धर्म, कला-स्थापत्य , शिक्षा, पुरातत्त्व जैसे विभिन्न विषयों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण अनुसंधानों पर प्रकाश डाला | इस सोलह दिवसीय ई-कार्यशाला में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और संस्थानों से लगभग 500 प्रतिभागी जुड़े|

पहला दिन (12-11-2021) -

उद्घाटन सत्र-

मुख्य अतिथि - श्री देवेन्द्र कुमार सिंह (सदस्य भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्)

मुख्य वक्ता - प्रोफेसर सुष्मिता वासु मजुमदार (प्रा०भा०इति० एवं पुरातत्त्व विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय)

विषय - "Epigraphic Text and Their Context

प्रथम दिन के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि श्री देवेन्द्र कुमार सिंह ने अपने वक्तव्य में भारतीत संस्कृति में खान-पान और वनस्पतियों के वैज्ञानिक महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इतिहास में जय और पराजय के परे भी एक इतिहास है| मुख्य वक्ता प्रोफेसर सुष्मिता वासु मजुमदार ने "अभिलेखीय पाठ एवं उनके सन्दर्भ" विषय पर अपने व्याख्यान में अभिलेखों के ऐतिहासिक महत्त्व एवं उनके

संदर्भो की चर्चा करते हुए बताया कि यदि अभिलेख नहीं होते तो हम ढेर सारी ऐतिहासिक जानकारी से वंचित रह जाते |

<u>दूसरा दिन (13-11-2021) -</u>

मुख्य वक्ता - प्रोफेसर प्रवेश कुमार श्रीवास्तव (डायरेक्टर , यू. जी. सी . एच .आर .डी .सी ., बी.एच .यू ., वाराणसी)

विषय - "भारतीय इतिहास में पुनर्लेखन की प्रासंगिकता "

प्रोफेसर प्रवेश कुमार श्रीवास्तव ने अपने व्याख्यान में इतिहास पुनर्लेखन में तथ्यों एवं प्रमाणों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इतिहास में तथ्य को नहीं बदला जा सकता लेकिन प्रमाणों के आधार पर तथ्यों की व्याख्या बदलती रहती है |

<u>तीसरा दिन   (14-11-2021) -</u>

मुख्य वक्ता - प्रोफेसर संतोष कुमार (प्राचार्य, राजकीय पी.जी.कॉलेज, कपकोट, उत्तराखंड)

विषय - "प्राचीन भारत में शैव धर्म की उत्पत्ति एवं विकास "

प्रोफेसर संतोष कुमार ने अपने वक्तव्य में "प्राचीन भारत में शैव धर्म की उत्पत्ति एवं विकास " विषयक व्याख्यान में सैन्धव सभ्यता से लेकर पूर्वमध्य काल तक के विभिन्न युगों में साहित्यिक एवं पुरातात्त्विक साक्ष्यों के आधार पर शैव धर्म की प्राचीनता एवं विकास को रेखांकित किया |

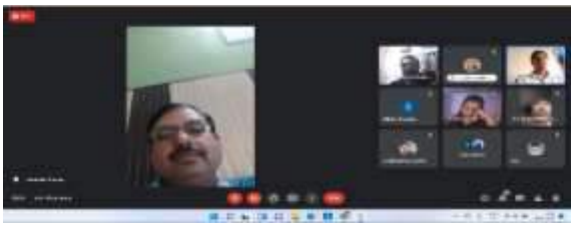

<u>चौथा दिन (15-11-2021) -</u>

मुख्य वक्ता - प्रोफेसर अनिल कुमार (प्रा.भा.इति. एवं पुरातत्त्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ)

विषय - "प्राचीन इतिहास के अध्ययन में पुरातत्त्व का योगदान"

प्रोफेसर अनिल कुमार   "प्राचीन इतिहास के अध्ययन में पुरातत्त्व का योगदान" विषय पर अपने व्याख्यान में उन्होंने बताया कि पुरातत्त्व इतिहास को जानने का एक ऐसा माध्यम है जो वैज्ञानिक तकनीकि के द्वारा सर्वेक्षण एवं उत्खनन करता है और प्राप्त पुरावशेषों का वैज्ञानिक रूप से तिथि निर्धारण करते हुए उस समय के मानव जीवन के धर्म, अर्थ, कला, भाषा इत्यादि समस्त क्रिया-कलापों का निर्धारण करता है |

<u>पांचवा दिन (16-11-2021) -</u>

मुख्य वक्ता - प्रोफेसर सुमन जैन (प्रा.भा.इति.,सं.एवं पुरातत्त्व विभाग , काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी)

विषय - "New Silver Coins of Madardeeh"

प्रोफेसर सुमन जैन ने उक्त विषय पर अपने व्याख्यान में उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के मादरडीह नामक पुरास्थल से उत्खनन में मिले रजत लिपित तांबे के सिक्कों के ढेर को लिपिशास्त्र के आधार पर उन्हें प्रतिहारों का सिक्का बताया |

<u>छठां दिन (17-11-2021) -</u>

मुख्य वक्ता - प्रोफेसर डी.पी.दूबे (प्रा.इति.सं.एवं पुरातत्त्व विभाग, इलाहबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज)

विषय - "भारतीय अभिलेखों का महत्त्व : नए अभिलेखों के सन्दर्भ में"

प्रोफेसर डी.पी.दूबे ने "भारतीय अभिलेखों का महत्त्व : नए अभिलेखों के सन्दर्भ में" विषय पर अपने व्याख्यान में अभिलेखों के महत्त्व को बताते हुए कहा कि यदि भारत में अभिलेखों का अध्ययन बंद हुआ तो मिथकों के आधार पर इतिहास लिखा जायेगा |

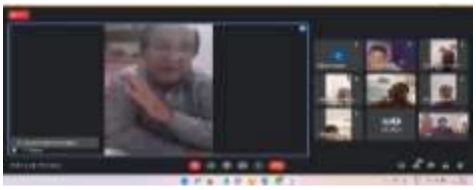

<u>सातवाँ दिन 18-11-2021</u>

मुख्य वक्ता - डॉ. महेश कालरा (डायरेक्टर , सेंटर फॉर न्यूमिसमैटिक्स इनफार्मेशन ऑफ़ स्टडीज, मुम्बई)

विषय - "An Integrated Approach to History : Employing Numismatics and Allied Disciplines as Effective Source of Information"

डॉ. महेश कालरा ने उक्त विषय पर अपने व्याख्यान में सिक्कों का पुरातत्त्व, अभिलेख, लिपि, कला, धर्म, अर्थ इत्यादि विषयों से अंतर्संबंध बताते हुए मुद्राओं के महत्त्व को व्याख्यायित किया |

<u>आठवां दिन (19-11-2021) -</u>

मुख्य वक्ता - प्रोफेसर डी.के. ओझा (प्रा.भा.इति.,सं.एवं पुरातत्त्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी)

विषय- "भारत के प्राचीन इतिहास लेखन की आधुनिक विधाएं"

प्रोफेसर डी.के. ओझा ने अपने व्याख्यान में इतिहास लेखन से सम्बंधित महत्त्वपूर्ण विधाओं - प्राच्य विद्या, भारत विद्या, साम्राज्यवादी, राष्ट्रवादी और मार्क्सवादी इतिहासलेखन का महत्त्व बताते हुए कहा कि इतिहासलेखन सदैव उसके परिवेश पर आधारित होता है| उन्होंने बताया कि इतिहास में जितना तथ्यों का महत्व है, उन तथ्यों की व्याख्या भी उतनी ही महत्वपूर्ण है |

नवां दिन (20-11-2021)

मुख्य वक्ता - प्रोफेसर सीमा बावा (इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)

विषय- "Early Temple Art and Architecture"

प्रोफेसर सीमा बावा ने "प्रारम्भिक मंदिर कला एवं स्थापत्य " विषय पर अपने व्याख्यान में

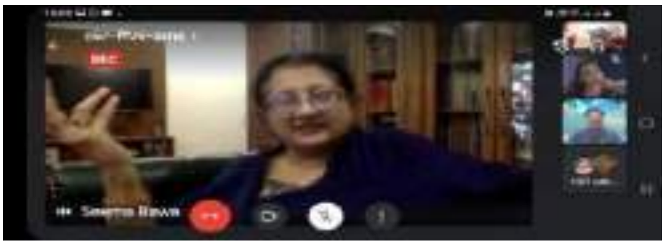

बताया कि मंदिर स्थापत्य का उत्स प्रारंभिक लोक कला के अंतर्गत यक्ष-यक्षिणी की मूर्तियों में देखा जा सकता है, जिन्हें किसी वृक्ष,सरोवर या स्तम्भ के किनारे स्थापित किया जाता था | यद्यपि प्रारंभिक मंदिरों के साक्ष्य ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में मथुरा के सोंख से मिलते है|

दसवां दिन (21-11-2021) -

मुख्य वक्ता - प्रोफेसर आनन्द शंकर सिंह (प्राचार्य , ईश्वरशरण पी.जी. कॉलेज , प्रयागराज)

विषय- "शिक्षा की भारतीय परम्परा"

प्रोफेसर आनन्द शंकर सिंह ने "शिक्षा की भारतीय परम्परा" विषय पर अपने व्याख्यान में बताया कि संस्कृति के सभी आयामों में शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण आयाम है | उन्होंने वैदिक कालीन शिक्षा के स्वरुप एवं प्रविधियों की चर्चा करते हुए कहा कि वैदिक काल में न केवल शिक्षा अवधारणा विक्सित हुई बल्कि उसका पूरा तंत्र विकसित हो चूका था | साथ ही उन्होंने सिक्षा के क्षेत्र में एक नए शैक्षिक विमर्श की बात पर भी जोर दिया |

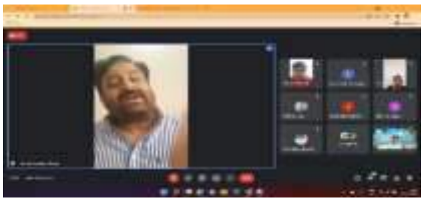

<u>ग्यारहवां दिन (22-11-2021) -</u>

मुख्य वक्ता - प्रोफेसर गंगाथरन (इतिहास विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी)

विषय- "इतिहास दर्शन के विविध पक्ष "

प्रोफेसर गंगाथरन ने "इतिहास दर्शन के विविध पक्ष " विषय पर अपने व्याख्यान में बताया की किसी भी ऐतिहासिक अध्ययन में घटना का परिप्रेक्ष्य देखना आवश्यक होता है क्योंकि सभी परिप्रेक्ष्य सापेक्षिक होते है |

<u>बारहवां दिन 23-11-2021</u>

मुख्य वक्ता - प्रोफेसर अजय कुमार सिंह (पूर्व निदेशक, भारत कला भवन संग्रहालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी)

विषय- "पश्चिम हिमालय की कला एवं संस्कृति "

प्रोफेसर अजय कुमार सिंह ने "पश्चिम हिमालय की कला एवं संस्कृति " विषयक अपने व्याख्यान में पश्चिम हिमालय की कला-स्थापत्य पर प्रकाश डालते

हुए संस्कृति में निरंतर नए-नए तत्व जुड़ते अथवा समाहित होते रहते है, जिनका प्रतिबिम्ब हमें तत्कालीन कला में देखने को मिलता है | अतः किसी युग अथवा क्षेत्र की कला में तत्कालीन इतिहास या संस्कृति के प्रत्येक घटक प्रतिबिम्बित होते है |

तेरहवाँ दिन (24-11-2021)

मुख्य वक्ता - प्रोफेसर सुमन जैन (प्रा.भा.इति.,सं.एवं पुरातत्त्व विभाग ,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी)

विषय-"Ardhfalakas : The Earliest Jain Monk of Mathura (With Special Reference to Art and Epigraphy) "

प्रोफेसर सुमन जैन ने उक्त विषय पर अपने व्याख्यान में मथुरा से प्राप्त प्राम्भिक कुषाण कालीन कलावशेषों पर उत्कीर्ण अभिलेखों में उल्लिखित प्रारंभिक जैन भिक्षुओं के अर्धफालकों की विस्तृत जानकारी दी, जिसमें उन्होंने बताया कि जैन भिक्षु अपनी नग्नता ढकने के लिए एक वस्त्र का टुकड़ा साथ में लेकर चलते थे जिसे अभिलेखों में अर्धफालकाज कहा गया है | साथ ही उन्होंने जैन साधुओं को अहिंसा का सबसे बड़ा पोषक बताया |

चौदहवाँ दिन (25-11-2021) -

मुख्य वक्ता - प्रोफेसर आलोक त्रिपाठी (ए.डी.जी., आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली)

विषय- "Under Water Archaeology and Recent Finding on Indian Contaxt"

प्रोफेसर आलोक त्रिपाठी ने उक्त विषय पर अपने व्याख्यान में भारत के जलीय पुरातत्त्व की चर्चा करते हुए महाबलीपुरम, एलिफैंटा, बनग्राम तथा द्वारिका जैसे जल में समाधिष्ट अन्तःजलीय पुरातात्विक धरोहरों पर विस्तृत प्रकाश डाला |

पन्द्रहवां दिन (26-11-2021) -

मुख्य वक्ता - डॉ. बी. आर. मणि (पूर्व कुलपति , राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली)

विषय- "No Dark Age (1600 BC- 600 BC)"

डॉ. बी. आर. मणि ने अपने उक्त विषयक व्याख्यान में सिन्धु सभ्यता के बाद से लेकर बुद्ध , महावीर के आगमन तक लगभग एक हजार वर्षों के कालखंड को इतिहासकार अंधकार युग कहते है लेकिन ऐसा नहीं है | उन्होंने बताया कि वैदिक जनों से भारत का सांस्कृतिक विकास प्रारंभ हुआ और इन्ही जनों से जनपदों का विकास हुआ |

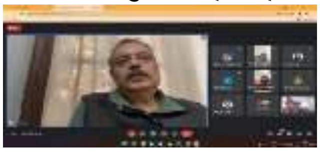

सोलहवां दिन (27-11-2021)

समापन सत्र

विशिष्ट अतिथि - प्रोफेसर डी.एस. चौहान (प्रो.चांसलर, जी.एल.ए. यूनिवर्सिटी , मथुरा)

मुख्य वक्ता- प्रोफेसर वसंत शिन्दे (पूर्व कुलपति, दकन कॉलेज एंड पोस्ट ग्रेजुएट रिसर्च इंस्टिट्यूट , पूना)

विषय - "पुरातात्त्विक शोध में वर्तमान प्रगति : राखीगढ़ी के विशेष सन्दर्भ में "

समापन सत्र के विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर डी.एस. चौहान ने अपने व्याख्यान में भारतीय संस्कृति की विशेषता के साथ ही युगों-युगों में उसकी निरंतरता पर प्रकाश डाला तथा मुख्य वक्ता प्रोफेसर वसंत शिन्दे ने "पुरातात्त्विक शोध में वर्तमान प्रगति : राखीगढ़ी के विशेष सन्दर्भ में " विषय पर अपने व्याख्यान में हड़प्पा सभ्यता के एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल राखीगढ़ी से प्राप्त पुरावशेषो एवं नरकंकालों के डी.एन.ए. परिक्षण के आधार पर उन्हें भारतीयों का आदि पूर्वज बताया |